बीवी का गुलाम और माँ का

हज़रत मुफ्ती अहमद खानपुरी दब.

महमुदुल मवाइज़ उर्दु से रिवायत का खुलासा लिप्यान्तर किया गया है.

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

आदमी अपनी बीवी की फरमाबरदारी करे और माँ की नाफरमानी करे बीवी की बात मानता है और माँ की बात नही मानता आजकल माहोल ऐसा ही होता जा रहा है के बीवी की बात सुनी जा रही है और माँ की बात पर कोई ध्यान नही दिया जाता बडे अफसोस की बात है अल्लाह माँ की नाफरमानी से हमारी हिफाज़त फरमाये.

शहर बिन होसब केहते है के एक मरतबा एक बस्ती के पास से मेरा गुज़र हूवा बस्ती के आखिर मे कब्रस्तान था मे वहा पोहचा तो देखा के एक बुडी औरत वहा एक चारपायी पर बेठ कर सूत कात रही है और ये असर और मगरिब के दरमीयान का वकत था अचानक किया देखता हु के एक कबर फटी और उसमे से एक आदमी नवजवान जेसा उसका आधा

जिसम तो इन्सान की तरह लेकिन चेहरा गधे की तरह था निकला तीन मरतबा गधे जैसी आवाज़ निकाली फिर दोबारा कबर मे चला गया कबर बन्ध हो गई.

लोगो ने पूछा के आप उस बुडीया को पेहचानते है? मेने कहा के नही पहेचानता कहा के ये जो आपने अभी कबर से जिस जवान को निकलते हूवा देखा ये उसकी माँ है वो शराब पी कर आया करता था तो माँ उसको समझाती थी के बेटा तू ये किया करता है तु अल्लाह की नाफरमानी मत कर शराब मत पी अल्लाह से अपने गुनाहो की तौबा कर ले तो वो जवाब मे ये केहता था के कब तक गधे की तरह बोलती रहेगी, एक दिन असर के बाद उसका इन्तेकाल हूवा तो लोगो ने यहा दफन कर दिया जिस दिन से दफन किया है रोजाना ये मन्ज़र लोग देखते है.